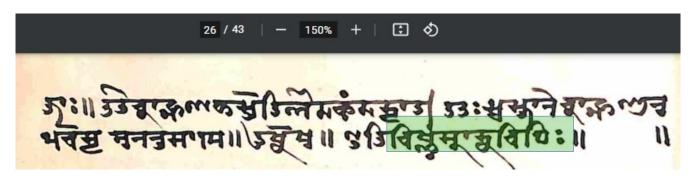
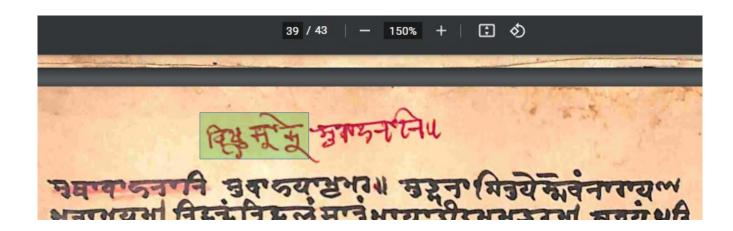
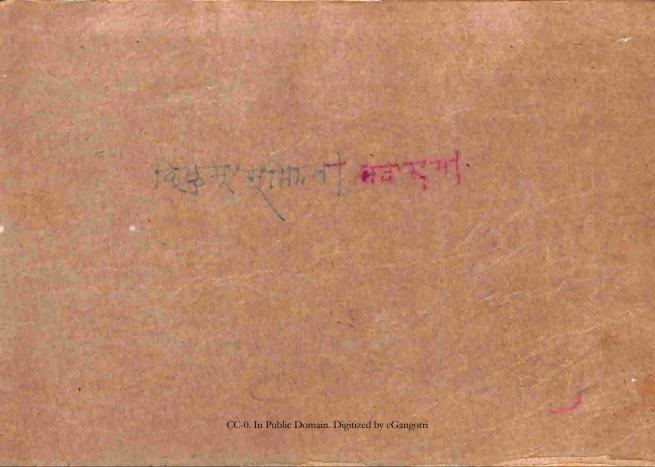
shopian 2.pdf

Title : Vishnu Shraddha Vidhi (विष्णु श्राद्ध विधिः)

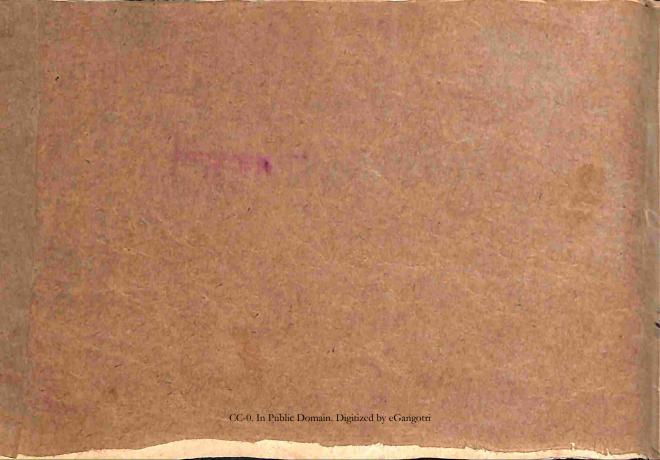








CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri



间等更更州山 विमाणियुक्ति युक्त भक्षल विकिष्ट मक्षेत्र कर्म उस्को कर लकलम्मा प्राये भेरकलमा प्रथान ए ज्ञार कलमा न उन्मिर्म उन्नेयक्ल माने मेर्भाल इस्म अप्योग। न हिनेत्र व्याप्त कलस्य एनंगी न्याय । अन्तिः वास म्त्य दं। भारत्यान्।। भूषिभक्तिने भूगिष्ठाः मध्यमा। विश्वक लमे भुडि इ है । १ किकलमें इक में ९ मिन्कलमें मिने वुद्धे । यमकले में योगेम छेप मिरकेल में प्रें पिस्न यहा भारत या। ह उन्मायल व व दे के देमम । स्यक्त्रमें ये व दे वि इंभीडिं। उसा मा मंद्रिमा असूथ चडेडि एन्यू प्राप्ता नेन्य भा विराभक्त नामयो नामयो । हक्टि। क्यमेक्यू हणके वे भी भचे डिभचं भठे असमिविद्धे। भग्न सन् भः॥ उउसरामान भानी यभाक्षणहें भ्यायिसंभन के द्वित्र वेत्र में क्रिये विक्र के विक्र क क्रिभन्यअकेन रामः॥ जीने स्वाभिराहि॥वीवनी वस्। यर कि महुर अंकानाभाउचे मुत्रये । हवाहे वासम र निधमा AND MENT OF THE PUBLIC DOMAIN DIS

हणवरे भाषीर्भायविश्वव ह अष्ट्रिक्टः बक्सान् डि ए रिनान यल्डः म मंद्रयसान अविद्येम थान्यु उन प्रक्रिकः द में भूष्य विद्वार १३ विद्वानिविणनि प्रथनियः॥ चप्रभेडनि पि इउदाला अहेन यह हवा भिरंबिश्चवेष्ट कि विश्ववातिकान. भ्रम् ०३ प्रभेन्भः॥ भेद्वः भा ने विन्ः॥ म्बर्श्टरभेन्द्र इ उःथासुभारका ॥ द्रः भन्यभावा र विद्रह्वः सः ३ वर्भसन्ता ३ वास अस्मित सम्मा अस्मित अनुमित । जिस्से अ रुक्षर ३ अदर के विनी चर ३ नेने एम ३ व्याला अद ३ नुजी इि मह मुक्सें सक्ष्यक्ष्यम् हिया व समी मुक्त सम क्षा एक मही इसकी प्रविधारि कि विश्व के की यहाँ का भट्डभाभा भीट्यं भाविष्याभालक्षेत्र बन्यम र भक्षणल थाः म्याः ववाद्यः मधमा धार्षाः प्रदामाः मुक्तान्।। कि॥ए जनगय धने म न्द्रस् अविष्टः मध्या उत्त्र भीने उ

में चर्ने (५) विद्वीतिक कि सम्बन्धिक के उसे हिक्कि। भूमनिविद्यस् विद्यप्रकलम्यस्मयमः क्रिक्ष्का भूउक् ए जन ग्येणक् माजिस्त्रा, यज्यक रियाल्य प्रतिकार्थ । एवं किरी विश्वास, इतीय माजिक प्रसम्भवता एवं क्ष्मिल समाचारम उसमाहि भाक्षिमचं विद्यु अरानं जदारा ॥ उज्यासमा अस्वभाष्ट सम्बेष नकलमे॥ भट्टनकलमे॥ उउः भूडिभण्यम्भ छण्वत् ॥ उउः इव लक्तमानाभा भूउक्तमाना । एडनग्यलनाभा माउच मझगण्या रिक्टिरिडिकलम् थ्यं भूडिभावानिया भूडिक इक् । सिवंद्र 3 यमसण्य म छंडि। सन व्यक्त मा मा प्रच मसर्ए येग्ड निम्। जियक्र ॥भएरिने अविस्टूट १ थि भीद् के। उग्राउः भाषिरात्म मुश्ये क्षांस्ति । एवं भेगा मुझ्यान मुद्रन विकितिहारिक मुश्या मुश्ये अम्बर्ग इ ममान्यमा। ब्रष्टाकाने अमान्या असान्या कारा CC-0. In Public Domain. Dightized by et jangotri

当市中国中华的国际公司国际公司的广大和外

村 及以 《梅甘保经》出到 (1)

उउद्युर ए प्राचनिके खेरा सब्येशक र ए प्रीकृति ने ब मन् एउपात्रे॥ वेद्वानगायेडि यम्बाइडि न्यान्मिडि इस्मानिडि हि किस्ते विषय अपना वेशानाय किय मनन थि। विक्र करी जी भे में मनि में विश्वा । इने विता । कि विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व नवाभि॥ धनः भरिस्छ इ अवहस्य हैं के प्राः भाविर भक्रणाभाग्य।। ठवाडे १॥वास्त र ध्रहीर्भयरणिसचा । क्मान्। ए क्नारा, थाक्रय, अस्पिष्टः इस भवमिव ०३ का भाम भूति । एवं भूमाभि॥ चुष्टास्त्रने, चुर्ने भठा गल्याउचे उट ती क्रि वास भावी अपरिश्वासम्बं अस्ति है: इमें अबस् ०० उम लक्ष्मा, ब्रष्टाकाणे ॥ ज्ञानवादिभेश। निस्मीम वेसक्षेत्रवा भूणनं इक्षिक्षेः वस्ति ।। । इस्ता । प्रदेश मिर्दे दे । इस्ता : कंभ ः समिल्यालः अदा ठवाडे १॥ भग्निसं । क्रिका मिने प्रते । क्रीमणा म अविधिशन्।। वयदे में येगके भारत्यान एकवा कित् वर् अह ग्या सम्भाग मित्र मित्र स्मा वर्षा वरव्या वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा

9

उ. गलथा उं हवने १ वर्षान्तः धर्मी थे ले उदले नर्रेट्य र्थर्रिंग्वड उदले मन्नमः पि निर्मे रि ट्यांस स्थाउ न्यास विम् गुल्था डि: जन विद्रेः व्यम्ययाः उउः अयद्वि उत्तक्त्र उर्भाभ मनेन. थि(मिबिक्के: नगी श्रम म् वास्त्र ने विके ॥ प्रम् विके उञ्चतः मं भाकाः व्यक्तिः व्यक्तिः व्यक्तिः ध्रमस्कर्णक्र इरलम न्नेनमः पि प्रविद्धरगीः भूषम ह ठवानी विकल्मा भक्तिगा हुना । भीयां। उड़ का लि।। क्षेत्रवाना । विद्वकालं विद्यक्त विद्वकालं विद्यक्त विद्य

उदल्ला मिरेष्ठ्र मिर्भक्तानि ।। इधल्ला सम्मण्य राभसानिअ क्ष उद्यान ॥ वडियान थिर्यक्ष ॥ मुद्दूर्यक्ष भट हाः भीयां। ए उन्वय्या देशः व्यदे के प्रकास उदलमा कि विविद्याय द्वाउद्या ने अट्ने मा ए जिनारायणः श्रीयन्भागिषद्धप्रि भाष्ट्रायप्रनार्धन्यस्य कि एनर् ये उत्तर ।। उद्भारत । इन् । वर्ष इस इस ।। इन् या वर् व्यापाक उपला गरायां ने उपला ॥ 530 जिन्निन विज्ञान भाषिर भद्राणणपाउँच प्रदामि ठकाने १ वासे है। था ही इभाग्यराकि ए जनगुर्वल है: प्रन्य भ्रम् १४ चयावे म नेरेने॥ पडाभने अले ने में जिस्किल्ये हैं भेड़ थिए कि मुडीड, ब्रह्ड भाल्युमभास्त्रिराहि, भर्डाम्प्स-नग्रहाः शीः चेयदिवस्थे । चेत्रः चार्यः व था ही १ थ छे हा मि

मुभ्भू ह उर्ले क् रायु क् स्मान्ति। ए क्रन्यायणने क मुक्नि। श्रिक्का विकेषि भ्रम्मित मिष्यिक क्रम्भू लाने क्रिंगेच विषय, हरीय, विश्वामित्र विषयित प्रसानित, गहा किस्ति एउने भन्यक एउन्से बा । अचवस्ति है। उस्ति ह युमं विश्व नयाभा। भना प्रिंपिनिस्टिश वे स्तिवा मिनिटके अन्य हण्यस्य ।। आस्पार्थिक ।। अस्पार्थिक । उर्मार्शियार रिन्मायाणक्रिकाः॥=॥ क्रान्याक्रिकार प्रकार मद्भाषाः भ्रम्क्षण्या भट्टनम्यथामण्डाकारे ॥ भट्टापकुक्र पिट्ट पहिंगा अङ् ॥ध्येष्ठीरुभर्गकलन्मज्येन्तुः॥इःभरमं ३ नेने धननाय ३ वर्ष ३ स्रिउन ३ नमः कराल ३ विष्ठ ३ ना भि मुमिनवार रिश्वाय र अद्रुभाय र वेनी स्राय र नेने एम र णिभद ३ नगीरिं म मह मुस्कमण्सष्ट्रपक्षमा ह ा ग्रेडिकारित हैं के देव के के मान माने हिन्दी हैं ते हैं के कि कि हैं में कि TUZUTZ WEST Dublies Deprin Digitized by eGangotri

इंश्रुम्, चक्माया भुउविद्धेः। ह प्रनगर म् अर्ने भूतिरामि डेबंगिर्विणिडि भूडांभेविश्वमु छ इना पित्रक्षिर कि मिडवियं प्रम म नेक्र ॥ मंत्री नाएम थाडीर्भायरादि म भिरे विद्ववंदरिक भूडिन म्था

भ्याने हैं हैंगाः क्यान परिवरित्त कि प्रमाभूभवं भनभा मीरे भर उंचर भिष्टा। मुम्पेन रा त्राप्यावता निवासिता १ मेरा पु अविट विश्व अवीर्भिष्ठे प्रमाम् । अवीर्थण्य म यमेपार्उ॥ एकमस्थाया म। उर्गेर्थय म मननभः ९॥ मान्या था वि गया पर भर का मानिक इरिह्नव प्रशिव भूमिम म चन्नमः चन्नभप १ भूगविह्न माम्या भ्यविष्ठ देमार्थिक निर्मित देमार्थ च्यलहे पंसाननभः॥ मंत्र थे बी

कि भूष्य म विभागनं भिरे विश्वति प्रटारि भूष्यम् वर्भागं नं॥ च्याउनभक्षेत्रव्यक्षीयुभविश्वामयः कृत्या चुणात्रः अपवादः भूषायाः चुज्जास्य।

महिल्लान्स । मिन्नी पद्मी उपाय द्राप्त पिन्नि विद्व भूष्य प्रम्म म्बन्यानं ॥ रिन्नः भूक्ष भिट्टारे च गीउ ० म्हां च भक्ष भाष्य भूक्ष भूक्ष प्रमा क्ष्य क्ष्य

वायाउभयम कला० मः यमिष्डा । चकामा थिः विहे उिम्हि थियरेनमः स्थे मार्गिथकः ना उउ कि रीयथं इ: भर्मिरिक नगें , १, महु अविस्कि, ह्यानी, धर्मिर्य किरीयविश्वमा विश्विष , वन प्र ॥०। चन्नान १ उत्साउन यु १ थि देशि कि विष्य निक्षि थि दिन मः स्परि ॥ एवं भ ॥ उउस्जीयपद्भी हः भन्मिस्टिक म्हिन्दि म्हिन् हरूनी। पहीं उथ विसे ० इरीच विसे थिए ने महा महान ० इस्पु भित्र ० वप्य अपय । (थिंड: विश्व हरीय प्रविश्व । हु: भुक्रमभिरुपि खरीउ F

उच्च इथः रीष्ठ से मभ्ती भिक्ने। भवाने पुर परच हरिता विकिन कृषि। ष्ट्रा प्रदेश प्रमेश प्रक्रिक के सिन्भ के किर्म के किर किर्म के क मिट् नेभूनेवड्नि ॥ उउन्माम्य भ्रमभविश्व मुद्द हिं ह म क असिर्भ के सम्भारत भिर्देश्योने भे के से में प्रेडिंग रे मुम्या। उउद्यक्तल्हः कही ५ म स्मर्। उर्गे वेया, कुमभनीय थिरिव भू मामनीयं। ए इनिया लहः मुम्मनीयं॥ क्ष विविद्यम् इं इत्यम् के अच्यम् विदे भमामाम भवे प्र यस्गभान्मभाग्मयग्मिक्षा असम्भवस्त । मिन्र थहि । भयरपिष्टमित्राण्ये। ए जनगणला कः मित्राण्ये॥ एउपम वराष्ट्रिक्तिक्ष्या । इरः ब्राह्मा विकारिक विकारिक ॥

उउ: प्रिल्यः कृत्मानंत्रासिक्त्रिक्र । इ: प्रध्विति चर जी के महरादि हवानी बाससेब्ध र अधीर भेर रामि ए इनगराणनामा उद्भने भिष्ठितिष्टाम हिनिएकाचि स्टूर् क्रिप्र विद्या क्रिया क्रालक लाम प्र ए दिन्याय क्रिया वासुक्रभस्र॥यर्वेमक्॥ उउःभूतिभायाचाभाभयालि॥ च्य निभा देराः भन्दर्या ॥ ५३: क्रिक्न क्लम्नं । मह्म मह 53: भिट्टकृत्नमण्ने नानम्बद्धगाउप्रिमा ए इनग्यल्ये म समन्ति। अल्य अधिक थिउ अनिगम् अधि। इक्ष्मं नेने इक्रलेडिउइल्मा। मुझ्येक्क्ल्यम्मूडिभग्येड भाविशिलम्बहुडा,हवानी, भि प्रविद्वितिशिमचिधानाभा

इसार प्राउवाभान भूषमितिस्मा र धर्मार्थायविस्ति र दुर्भर छार्थि दुकल में भवाभें भे में म मानि ना भाषि च हुए हराने भिक्रिक्षितिहारि मगीय भ्रम म मर्भिप्यो कल र रुभमक् पकुलामें॥ भावि मुड्उ हरेग्न् र्शि मुर्ग उत्तर अंगर थाय मिवाय ह दुभ उत्तर भामितकली। भाषि मुट ठवानी भिडिचिह्ने विटामि मडीउव भ्रम्भ म वा युर्थाययभाय र एभवायुर्भक्ताम ॥ 53: ४ उक्त्तमान् रिभायये ।। भाष मु ठवानी (भ रिवि स्राग्डवा, भ्रम् म रुमे भ्र उतिसुकल्तमं भिक्षणः॥ एवं भीरियउरेभ ॥ इउए इनेप्यं कला मान्या इर

भाषि, मुक्त क्वानी भि इचिस्ति हिट कि भचे थान मडाउवा भ्रम् ० प्रमेकलमंभिकिष्टं ॥ एवं म थामक (यक्काण्यक्किल्सुम् भावि च्ड ठवानी (५) विद्वितिर किस चिभानाभानिगानीक चरीउवडा असम र असी म मक् म उसी म पुभाना पहीं युपिक्ष मुद्रापद्क उर्ले युपिक कलमाना कर था न्मानि के।। यमकलमः धमक ॥ उउः भूषिमाम् इण्ड भावि प्रष्ट हरानी पि विश्वितिहारि भाष्य्राविष्ठनाम मुडाउचा भूष्म र विस्कुमायुष्ट् वास्मियाय उ प्रभाविस् भी अंग भन श्रंभा में भमिति भामम् कर हु । के कर्राष्ट्र भक्षणयुक्तं विश्वर्भणययाम् भण्यसम् नि।भार्षिण्य

व भायमा।। हणवन्त्वः भासि हगवद्वाःभिद्विति ॥ चित्रक्षेत्रः॥ उउत्र न्य उरि म महम्यकम्मस्मिक् चुक्मानार। उद्या । उन्गर्य

उउ मिलसक्म थिवीर्थाय ० म्राभाय ० उर्लेर ० वायर ० भिर्वि भ्रम्म डिल्मिक्नमः॥एवं कि रीय।। इरीय।। मार्ज पकनभः चित्रभूडिभिउरभा। मुम्बर ध्यमित्रभा म र म वाया म (भेरे विद्वाव भूषम म एवं भिज्या कायर मि भेर (उन्नयक्नभः।। ५३ गणुमामि मनकलमा थ।। भण्यस्य ५ (5) चयः भूरणभनक्रम्य॥ उउःकल्लम्थां अकृष गण्यहे न्भः ३ व्यम्बच्य ३ मिम्बच्य ३ म्ड्रप्तवना अल्गाल ज्याः भागः विम्यस्वश्चरिक प्रस्तिन उत्पर्धत्वश्च वद्भन थि अविद्वितिरुक्ति मगीउव ३। अस्य मकलम् अर्थिकाः गुरुभक्षला मार्थना अ मिस्रिक् मसु॥ यविषके॥ मुभनिस र्गः॥ उरेबुक्तलक्षिरिल्लेमक्ष्यक्ष्य इत्रः श्वर्षाने स्काल्यन् भने स्वालक्ष्य ॥ ५१३ विश्वम्य स्विति ॥ ॥

ग्रुसुरुअमहस्मान् मार् 'भेडेउडेग्राभगभेडा । यः कार्यन उ: ४ थे: धेकमा छ: विज्ञा इरा चुरावसन मुभाने सम्बन्धम् गाउदम् म् एउमजण्य कालायमण्डा अनिस्र

जुः॥ उरेबुक्कलक्षिकितक्ष्यक्षण उरः श्वस्नेबक्कण्यच भर्मेष्ठ मनवस्पाम॥ प्रश्लेष ॥ ५ि विस्तृम् स्विधिः॥॥॥

विद्वा डिर्ग दुरुगवसन चभार् का भाउण्यम गाउदि

00

भग्रानुमाराग्रीहिड्डाः उद्यानु॥स्टड भिष्ठाः धुरुमग्रा वेवालिङाः भावित्यंगाउग्य ॥भाष्ट्रांगु नभयचेडचे रणलभ्याक्रमभडाः भूयाँ विनाविवाकाने

वायुष्यभभीरा,वायुष्यमः मन्त्री वसुः भाष्युष्टारं वकामा,मिवः भाषाभाष्यविद्ववः भाष्युष्टान्या॥॥ विक्षणीय कारण हार णारे प्रमा ्रिकें भन मर् मर्मे गर्भ कि का स्थानिक संसा उराक मेव विक्रिम् अक थम्मा गणा है। मैंसेल मेंसे मुक्ट मेंसेल असर ें हुमार केल्यान केल्यान केल्यान स्थाप केल्यान स्थाप केल्यान दिनेन के लिंड - येन सिद्गास सहै भरमारी। म्तरी जारिका कर वह के लिए के स्वार्थ

भूभसभण्णय सरुम्थाय उत्पन्न कर्यन करूपन भिडिडिसाहि: यसलेड न्नामिक भयुष्य विद्ये उत्तर मिड डि: अने : भूद्र सभक्ति कुर यक्तवास्वक कण्निशिक्तिक कि न्तुमधि उन्विकः भन्राभि कियभि डिस्मिकः यम्ब मडमाहिः किरश्चिकारी प्रिकारिक विश्वास्त्र कर् यय गयन भद्य र कल भूरण्य के साधि दे दिवा के वर्डिभाव्छि। नेबद्धभाग्यिक्षित्रव्यम्। अजनभाषायाः भाषानान्या प्राचीन्या यम। जिसेम् भारता प्राचित्र में उद्दरम् अस्मिष् पद्भित्राथम् याष्ट्रिया विद्धया क्या कि विकेत् क्या रा दिन के साम् विष्ट वि

क्रियानभाष्ट्राचन क्रियापानीस्थियान क्रथः में अन्यतिविवान इराक्ष्माक्षरकलायाक्ष्याया। विवादासनानवा द्वादाः स प्रवासी अने ने प्रवासी में ये अने क्या मार्थिन में में मुः जमाकनिक्रचन्याञ्चा अयग्य उपसम्मारान्य यथा संस्था निन्वाञ्चाद्वीरा उपधीनत्व निम्सु वग्वनी भाराधिकनवः भय द्रभंकि। उपमयेक्वन्यि इनक्ष उन्यथमकि विष्ट्रभंदे उन्यथ भेठविष्ट्रविड मुक्तिमाइ भाग्ड नियज्ञ हथ्यन यक्ति मन्द्र कुन् यममे ह्यालन क्षण्यु प्रियं डेमण मिर उरा श्रामण कर्मना निभक्षिष्ट मिडि। गण्डराष्ट्रा निर्फान्य थमा हत्वक्रा मिर्ड उन्त ज्यार्डमेर्नेक्नकास्मान्ड॥ कुकार्वनाभएधयेराउरसनास्र

उठवाडभ्रदुग्रउवःभवद्गरःभवद्गग्रदगाउर्थ्य न्भा

विक्षम् मु मुगडनानिय

उक् जयारे ना महन मेर्च मावन गया भनग्यमा निद्वानिमल मानुभायाजी मभूरको मुख्य परि अलेग्समन्ने कि विष्ठ्य सम्बद्धा भागा सुर्भा भागा विष्ट्र मिना अलेग्स माना सम्बद्धा समित्र सम्बद्धा समित्र सम्बद्धा समित्र समित नेप व्रावकान भना हान रागम् उत्कालमा निन्ता भागमा राग माद्रान्धवमाद्रवभ अल्स् माद्व उस्वम्ह्र सन् गरण्यम लक्षी भी में उवा भार दें उद्या ठ्या विश्व किर् नानाभाष्ट्रन प्राधारमा इत्राद्धा कार्या कार् माभभ भी उभागार में बस्यान्यान महान ए ये कन प्रिनिए नभचक्भाडलभूमभा चिक्रिक्स भेचे उक्स अव भ निजुल्या असक्त असक्त क्रा क्रा अस्ति कुम भी उचा भर भर्दे उमा असत्रवस्त्रमा जैसे व मा उपा भी सुर भ विक्रमाधुरायराम् अद्केरिसभय्तम भवालक्षाभयक